

सं
वृद्धविद्यानलहृदय॥



सां

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
गदान् वज्रवृद्धिहर्तुनि स्म ॥ सर्वगानी नैव दमये अविद्याय वज्रक्राधर
यवजस्य पदा लघं ग स्म ॥ यच्छ्रद्धे नृणाम् सत्पुं दृढं स्थितं सर्वगं प्रति
हं सर्वगं पनाजितं ॥ सर्वसत्त्वविद्राघनकर्तृ सर्वसत्त्वात्मा दनकर्तृ
सर्वविद्याच्छ्रद्धा दनकर्तृ सर्वविद्यास्तृहनकर्तृ सर्वकर्मविधिस्तनकर्तृ

६

घनकर्मविद्राघनकर्तृ सर्वग्रहात्सादनकर्तृ सर्वग्रहविमाकुलकर्तृ ॥ स
सर्वरूपापकर्षककर्तृ सर्वविद्यामेशकर्मपनायक ॥ असिद्धानां सिद्धि
कर्तृ सिद्धानां चापि नाशनकर्तृ सर्वकर्मपद ॥ सर्वसत्त्वीनकुर्वीत ॥
जिकं पृथिकं सर्वसत्त्वानीकृतेनकर्तृ सर्वसत्त्वानामाहनकर्तृ ॥ ॐ
मीर्धं महावली ॥ बुद्धानूरावाशाश्च कुडावज्जपाधिः प्रपूजयन् ॥ ॥

३

नमान्नत्रयाय॥ गद्यथा॥ ॐ ग्रट२ ग्राटय२ स्फूट२ स्फोटय२ घूर्ण२ घूर्णपय२ सर्वसत्त्वानिवाधय२ सैवाधय२ ग्रस२ ग्रासय२ ग्रम२ ग्रामय२ सर्वरुगानिकूट२ संकूटय२ सर्वसद्गुनघट२ संघटय२ सर्वविद्यावज्र२ स्फोटयवज्र२ वटावज्र२ मटवज्र२ वज्राह्वातनीलवज्र२ सुवज्राय स्वाहा॥ ॐ हूँ हूँ हूँ लूनि हूँ लूधून हूँ लूनि हूँ लू कून् २ वज्रविययाय स्वाहा॥ ॐ वज्र

किलिकिलायस्वाहा॥ उँ कट २ मट २ नट २ माट नप्रमाटनायस्वाहा॥ उँ बल
२ निचल २ हन २ मन २ मानय २ वड विदो नष्टायस्वाहा॥ उँ किं २ हिं २
महावड किलिकिलायस्वाहा॥ उँ बंध २ क्रोध महा किलिकिलायस्वाहा॥ उँ
वून २ चंड किलिकिलायस्वाहा॥ उँ ग्रासय २ वड किलिकिलायस्वाहा॥ उँ ह
न २ वड किलिकिलायस्वाहा॥ उँ प्रहन २ वड किलिकिलायस्वाहा॥ उँ नगिदि
नवड २ गिदिनवड महावड २ अपतिहगवड २ हिवड २ श्रीवीजायस्वा

साम

३

हा ॥ ॐ धन २ धिनि २ धन २ सर्ववद कलमावर्तय स्वाहा ॥ मम सर्व धनमा
नय कुरु स्वाहा ॥ ॐ नमः सुमेतवडा धर्म सर्ववलमावर्तय स्वाहा ॥ मम सर्व ध
नमा नय कुरु स्वाहा ॥ ॐ नमः सुमेतवडा धर्म सर्ववलमावर्तय महावला
कि न धन. गतन. अचल. मंजुलमाय अतिवद महाविमलन. अजित कल
२ टिटिटिटि. पिंगल. गजवतितिति महावलवडा कुरु स्वाहा ॥ नमा
नल प्रयाय ॥ नमः चंद्रवद पाद्य महायजुसनापतय. ॐ हन २ वद न

3

धन २ वद धन २ वद हन २ वद पच २ वद धन २ वद धनय २ वद दानू २
वद न्दिद २ वद हिंद २ वद कुरु २ ॥ नमः चंद्रवद पाद्य महाक्रा धाय ॥ ॐ
कल २ तिष्ठ २ वेध २ हन २ दह २ नमः कुरु २ ॥ हृदया पद दयं मूल मंजु
सर्वपाप कुरु कुरु सर्वदुःख विनाशने ॥ मना हि सर्व मंजु धर्म सर्व श्री सम
लेकनः ॥ उपमं कद्रिया कलानव ॥ यहा सुखः ॥ लक्ष्मी नमि विनव्या
धनवत धनपनाद मुखः ॥ कोना प्रियजन दुःखा कुरु वद चंद्रपदनाः ॥ नमि

ॐ
अद्विष्टहृदयप्रार्थना॥

अदि

मा ॥ जगदेकहिनाविद्यासैग्रमगानिधीशुल ॥ ७ ॥ ऊर्गिपान
मिगादवीधमलिनीधनधायिनी ॥ पन्निनीपन्नधनीवपन्न
मासनमासनी ॥ ८ ॥ शुद्धरूपीमहानजहमवर्धप्रभाक
नी ॥ त्रिगामधीधनीदवीप्रह्लापूक्तकधनधी ॥ १० ॥
निधनकूटमानूताधन्यागनधनप्रिया ॥ ॥

न ३

॥ श्रेष्ठकमहाभादीदिव्याहनक्षत्रविधी ॥ ११ ॥ माग
नीसर्ववृद्धानीनलधनधनधनी ॥ शुभगारविनीदवीरावाला
वविवर्जिनी ॥ १२ ॥ वेनायकीविनगाचदीपिनीकुठारकंदनी
॥ हिंदिनीसर्वलानीसफपागलआरधी ॥ १३ ॥ ब्रह्मधीवय
मागाचगुफनाद्गुफवासिनी ॥ सनखनीविष्मलाजीवगुर्व्रक

आदि
३

विह्वलिनी ॥ १४ ॥ तथा गती महान्मा. वज्रिहि धर्म धनिनी ॥ क
कर्म धन धनी विद्या विषय ह्याला इमं जली ॥ १५ ॥ वा धनी सर्वमा
लानी वा धनं गृह्णन्ती ॥ धन्यादि मुक्तिं पन्ना नृ दया दय
हविनी ॥ १६ ॥ सर्वार्थ साधनी रक्षा स्त्री नृपामि न विक्रमा ॥ द
र्शनी वृद्ध मार्ग नी नष्ट मार्ग प्रदर्शनी ॥ १७ ॥ वागी धनी महा

१३

धर्मिणि सुखि धात्री धनं ददा ॥ स्त्री नृपनि धी सिद्धा या गिनी या गमी
धनी ॥ १८ ॥ मना हनी महा क्रान्तिं शुभं प्रियदर्शनी ॥ सार्थ
वाक् कृपा दृष्टिं सर्वं ता था गता लकी ॥ १९ ॥ नमस्तु महा देवी
सर्व सत्त्वार्थ दायिनी ॥ नमस्तु न दिव्य नृपी च वसुधा न नमस्तु न ॥
२० ॥ अष्टाक्षरं नाम प्रिकाले यः पठेत् तं प्राप्नोति नियतं

आ
व

सिद्धिमिप्तिर्गुणमनात्रथं ॥ २१ ॥ यदहं नाकृतीपापं आनंदयसि
कान्तं ॥ तत्सर्वान्कुपयिष्येति स्म न धामनामहदकः ॥ २२ ॥ अथ
वाभीलसंपन्नाः सज्जानि संस्मराह्वयं ॥ प्रियं ह्यदयवाक्कथं न
पवान्प्रियदर्शनं ॥ २३ ॥ विप्रकुप्रियकूलषूः आदयमपरा
यतः ॥ अन्तर्हमीध्वने प्राफुल्लं प्रयायात्सुखावर्ति ॥ २४ ॥

४

आ
ग

ॐ निवसुधनानामास्ताकृन्वातकैषु ह्यविर्गसमापै ॥ ॥ ॥
यधर्माहं तु प्रहवाहं तु न कीर्तयामः ॥ क्व वदन् वीचयानि नो ध
नवीवादिमहाध्रुवधी ॥ ॥ ॥

५

ASHA ARCHIVES

1.250

31/3/11